भारत सरकार

जल शक्ति मंत्रालय

जल संसाधन, नदी विकास और गंगा संरक्षण विभाग

लोक सभा

अतारांकित प्रश्न संख्या 1894

दिनांक 30 जुलाई, 2026 को उत्तरार्थ

.....

नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत भूजल प्रबंधन

1894. श्रीमती माला राज्यलक्ष्मी शाहः श्री रमेश अवस्थी:
श्री दुलू महतो: श्री सुखजिंदर सिंह रंधावा:
श्री अरुण गोविल: श्री राजकुमार चाहर:
श्री बंटी विवेक साहू: डॉ. संजय जायसवाल:

क्या जल शक्ति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) सरकार द्वारा गंगा बेसिन और मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में कन्हान और पेंच नदियों जैसी सहायक नदियों के जलग्रहण क्षेत्रों में भूजल प्रबंधन को सुदृढ़ करने के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत की गई पहलों का ब्यौरा क्या है और इन पहलों के परिणामस्वरूप भूजल स्तर और जल की गुणवत्ता में अब तक राज्य-वार क्या सुधार किए गए हैं;

(ख) गंगा नदी की मुख्य धारा के किनारे कृत्रिम भूजल पुनर्भरण के लिए एक मानक संचालन प्रक्रिया (एसओपी) तैयार करने की दिशा में अब तक कितनी प्रगति हुई है और इससे मध्य प्रदेश के उक्त जिले में जल संकट को दूर करने के लिए क्या ठोस कदम उठाए जा रहे हैं;

(ग) इसके कार्यान्वयन में देरी के क्या कारण हैं और क्या समय-सीमा तय की गई है तथा इसमें प्रस्तावित पायलट परियोजनाओं का ब्यौरा क्या है;

(घ) उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत छिंदवाड़ा के नदीय क्षेत्र सहित जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण के लिए किए गए उपायों/बजटीय प्रावधान का ब्यौरा क्या है और इस पर कितना व्यय हुआ है, क्या परिणाम प्राप्त हुए हैं और गंगा तथा तटीय पारिस्थितिकी तंत्र की प्रमुख जलीय प्रजातियों पर इसका क्या प्रभाव पड़ा है;

(ङ) क्या उक्त कार्यक्रम के अंतर्गत पश्चिमी उत्तर प्रदेश, विशेषकर मेरठ, हापुड़ और गढ़मुक्तेश्वर क्षेत्रों में भूजल पुनर्भरण, गंगा संरक्षण और भूजल प्रबंधन से संबंधित कोई परियोजना स्वीकृत या कार्यान्वयनाधीन है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा और वर्तमान स्थिति क्या है;

(च) क्या सरकार का गंगा उप-बेसिन के अंतर्गत आने वाले धनबाद के कोयला खनन क्षेत्रों में गहरे होते भूजल संकट को दूर करने के लिए परित्यक्त पड़ी खदानों से पानी का उपयोग कर भूजल पुनर्भरण के लिए किसी विशेष योजना का विचार है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है; और

(छ) धनबाद के औद्योगिक और खनन क्षेत्रों से संदूषित जल को गंगा की सहायक नदियों (जैसे दामोदर) में जाने से रोकने और जल संचयन को बढ़ावा देने के लिए क्या ठोस कदम उठाए जा रहे हैं?

उत्तर

जल शक्ति राज्य मंत्री
(श्री राज भूषण चौधरी)

(क) से (ग): भारत सरकार ने गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के संरक्षण के लिए नमामि गंगे कार्यक्रम (एनजीपी) शुरू किया है। नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत, गंगा नदी की सफाई और संरक्षण के लिए एक विविध और समग्र हस्तक्षेप शुरू किए गए हैं, जिसमें प्रदूषण कम करना, पारिस्थितिक बहाली, अपशिष्ट जल का उपचार, नदी तट प्रबंधन, ई-प्रवाह सुनिश्चित करना, ग्रामीण स्वच्छता, वनीकरण, जैव विविधता संरक्षण और जन भागीदारी शामिल है।

केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) छिंदवाड़ा जिले सहित मध्य प्रदेश में आवधिक भूजल स्तर और भूजल गुणवत्ता निगरानी और सक्रिय भूजल संसाधन आकलन करता है। सक्रिय भूजल संसाधन आकलन, 2025 के अनुसार, छिंदवाड़ा जिले का कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण 88,260.54 हेक्टेयर मीटर (हे.मी.) आंका गया है, जबकि वार्षिक निष्कर्षण योग्य भूजल संसाधन 82,881.36 हे.मी. है। सभी उपयोगों के लिए वार्षिक भूजल निष्कर्षण 49,994.57 हे.मी. आंका गया है, जिसके परिणामस्वरूप भूजल निष्कर्षण का स्तर 60.32 प्रतिशत है।

केंद्रीय भूमि जल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) ने मध्य प्रदेश के छिंदवाड़ा जिले में लगभग 11815 वर्ग किलोमीटर के पूरे मानचित्रण योग्य क्षेत्र में राष्ट्रीय जलभृत मानचित्रण (एनएक्यूयूआईएम) परियोजना को पूरा कर लिया है। जलभृत मानचित्र और प्रबंधन योजनाएं तैयार की गई हैं और इसके कार्यान्वयन के लिए इसे संबंधित राज्य एजेंसियों के साथ किया गया है। प्रबंधन योजनाओं में राज्य सरकार द्वारा कार्यान्वित किए जाने वाले कृत्रिम पुनर्भरण और जल संरक्षण संरचनाओं द्वारा वर्षा जल संचयन के रूप में आपूर्ति- पक्ष हस्तक्षेप शामिल है।

राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने दिनांक 07.03.2026 को विभिन्न हितधारकों के साथ "गंगा बेसिन में हाइड्रोलिक हारमनी की ओर - सतही प्रवाह और उप-सतह (भूजल) प्रणालियों के अंतर-संबंध को बहाल करना और बनाए रखना" पर एक राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में नदी-जलभृत अंतःक्रिया के वैज्ञानिक, तकनीकी और नीतिगत पहलुओं पर विचार-विमर्श किया गया।

(घ): नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत, एनएमसीजी ने भारतीय वन्यजीव संस्थान (डब्ल्यूआईआई), आईसीएआर-केंद्रीय अंतर्देशीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीआईएफआरआई), टर्टल सर्वाइवल एलायंस फाउंडेशन इंडिया (टीएसएएफआई) और बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी (बीएनएचएस) के साथ-साथ राज्य के वन विभागों और अन्य संरक्षण संगठनों सहित वैज्ञानिक संस्थानों के माध्यम से गंगा नदी बेसिन में जैव विविधता और पारिस्थितिकी तंत्र संरक्षण संबंधी कार्य किए हैं। इन कार्यकलापों में जलीय और तटवर्ती जैव विविधता का संरक्षण और निगरानी, गंगा नदी डॉल्फ़िन, घड़ियाल, कछुए, ऊदबिलाव, मछली और विलुप्त होती पक्षी प्रजातियों का संरक्षण; जलीय जीवों का बचाव और पुनर्वास; मछली

संरक्षण और नदी रेंचिंग; आर्द्रभूमि संरक्षण; जैव विविधता पार्क; वनरोपण; और समुदाय-आधारित संरक्षण शामिल है।

प्राप्त परिणाम:

- 22 नदियों में 2,850 किलोमीटर की प्राथमिकता वाले गंगा डॉल्फिन आवास की पहचान की गई
- 7,680 किलोमीटर नदी खंड़ों का सर्वेक्षण किया गया, जिसमें 3,037 घड़ियालों का दस्तावेजीकरण किया गया और राष्ट्रीय घड़ियाल संरक्षण कार्य योजना तैयार करने में सहायता की गई।
- संरक्षण प्रजनन कार्यक्रमों के माध्यम से 1,500 से अधिक मीठे पानी वाले कछुओं के बच्चे पैदा किए गए और 711 कछुओं को गंगा नदी में छोड़ा गया।
- 893 घड़ियाल बच्चों और 1,899 कछुओं को उनके प्राकृतिक आवासों में छोड़ा गया।
- भारतीय वन्यजीव संस्थान, देहरादून में राष्ट्रीय नदी अनुसंधान केंद्र (एनसीआरआर) की स्थापना की गई है।
- केंद्रित प्रबंधन के लिए छह संरक्षण प्राथमिकता वाले क्षेत्रों का रेखांकन।
- लगभग 6,800 जलीय जीवों का बचाव और पुनर्वास।
- 113 जिलों में 5,500 से अधिक गंगा प्रहरियों का एकत्रीकरण।
- गंगा नदी में फंसे डॉल्फिन के लिए बचाव एम्बुलेंस विकसित की गई।
- फरक्का, पश्चिम बंगाल में हिल्सा रेंचिंग स्टेशन की स्थापना की गई।
- 2.05 करोड़ मछली के बीज (इंडियन मेजर कार्प, महसीर और हिल्सा) का पोषण किया गया।
- गंगा नदी में 215 मछली की प्रजातियां (206 देशी और 9 विदेशी) का दस्तावेजीकरण किया गया है।
- उत्तर प्रदेश में 7 जैव विविधता पार्क विकसित किए जा रहे हैं।
- 5 गंगा बेसिन राज्यों में वृक्षारोपण के तहत कुल 33,024 हेक्टेयर क्षेत्र कवर किया गया है।
- आर्द्रभूमि बहाली और वैज्ञानिक प्रबंधन का विस्तार बिहार, झारखंड, उत्तर प्रदेश और दिल्ली में हुआ।

प्रमुख जलीय प्रजातियों और नदी पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रभाव:

इन हस्तक्षेपों से गंभीर जलीय आवासों को मजबूत करके, पारिस्थितिक कनेक्टिविटी बढ़ाकर और बेसिन में जैव विविधता की वैज्ञानिक समझ में सुधार करके गंगा नदी पारिस्थितिकी तंत्र के संरक्षण और बहाली में महत्वपूर्ण सुधार हुआ है। संरक्षण उपायों ने आवास संरक्षण, बचाव और पुनर्वास, संरक्षण प्रजनन और नदी रेंचिंग कार्यक्रमों के माध्यम से गंगा नदी डॉल्फिन, घड़ियाल, मीठे पानी वाले कछुओं, ऊदबिलाव और कई देशी मछली प्रजातियों जैसी प्रमुख प्रजातियों के संरक्षण और पुनःप्राप्ति में योगदान दिया है। आर्द्रभूमि बहाली, तटवर्ती वनीकरण और जैव विविधता पार्क के विकास ने पारिस्थितिकी तंत्र के कार्यों को बढ़ाया है, जिसमें बेहतर आवास गुणवत्ता, पारिस्थितिक अनुकूलन में वृद्धि, और जलीय और एवियन

जीवों के लिए प्रजनन और भोजन के क्षेत्र को सुदृढ़ करना शामिल है। गंगा प्रहरियों के माध्यम से सामुदायिक भागीदारी और संस्थागत मजबूती ने गंगा नदी बेसिन के दीर्घकालिक जैव विविधता संरक्षण, वैज्ञानिक निगरानी और सतत प्रबंधन को और मजबूत किया है, जिससे नदी पारिस्थितिक स्वास्थ्य और नदी पारिस्थितिकी तंत्र के अनुकूलन का समर्थन मिला है।

वर्ष 2015-16 से इन हस्तक्षेपों पर लगभग 600 करोड़ रुपये व्यय किए गए हैं।

एनएमसीजी द्वारा छिंदवाड़ा, मध्य प्रदेश के नदी तटीय क्षेत्रों को कवर करते हुए कोई जैव विविधता या आर्द्रभूमि संरक्षण परियोजना शुरू नहीं की गई है।

(ङ): पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 26 जिलों में गंगा नदी और उसकी सहायक नदियों के संरक्षण के लिए, एनएमसीजी ने नदियों में प्रदूषण को कम करने के लिए 1,278 एमएलडी की संचयी सीवेज उपचार क्षमता के साथ 6,409 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 33 सीवरेज अवसंरचना परियोजनाओं को मंजूरी दी है। इनमें से 354 एमएलडी की कुल उपचार क्षमता वाली 16 एसटीपी परियोजनाएं पूरी हो चुकी हैं और क्रियाशील हैं। (अनुलग्नक-I)

गढ़मुक्तेश्वर में, 47 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 9 एमएलडी सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) स्वीकृत किया गया है और इसे पूरा कर लिया गया है। मेरठ में, 691 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 220 एमएलडी एसटीपी स्वीकृत किया गया है, जबकि हापुड़ में, 49 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से 6 एमएलडी एसटीपी स्वीकृत किया गया है।

(च): नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत ऐसा कोई प्रस्ताव विचाराधीन नहीं है।

केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड (सीजीडब्ल्यूबी) ने सूचित किया है कि सक्रिय भूजल संसाधन आकलन, 2025 के अनुसार, धनबाद जिले का कुल वार्षिक भूजल पुनर्भरण 28,046.55 हेक्टेयर मीटर (हे.मी.), वार्षिक निष्कर्षण योग्य भूजल संसाधन 26,369.39 हे.मी. और सभी उपयोगों के लिए वार्षिक भूजल निष्कर्षण 19,681.13 हे.मी. आंका गया है। तदनुसार, भूजल निष्कर्षण का स्तर 74.64 प्रतिशत आंका गया है।

इसके अलावा, खाली हुए खानों से जल के उपयोग के माध्यम से भूजल पुनर्भरण के लिए कोई अलग योजना वर्तमान में सीजीडब्ल्यूबी द्वारा कार्यान्वित नहीं की जा रही है। हालांकि, खनन क्षेत्रों में भूजल संरक्षण और सतत् भूजल प्रबंधन को जल शक्ति मंत्रालय द्वारा 24 सितंबर 2020 को अधिसूचित जैसा कि 29 मार्च 2023 को संशोधित किया गया था, दिशानिर्देशों के माध्यम से किया गया है, ताकि औद्योगिक, अवसंरचना और खनन परियोजनाओं द्वारा भूजल निष्कर्षण के विनियमन के लिए किया जा सके। उक्त दिशा-निर्देशों में जल संरक्षण और जल उपयोग को सीमित करने के लिए निम्नलिखित प्रावधान हैं:

- परियोजना प्रस्तावकों को लागू भवन उप-नियमों के अनुसार परियोजना परिसर में रूफ टॉप वर्षा जल संचयन प्रणाली स्थापित करने की आवश्यकता है।

- खनन परियोजना के प्रस्तावकों को सतही जल के संदूषण को कम करने के लिए, जहां भी लागू हो, डीवाटरिंग अमूर्त संरचनाओं की एक श्रृंखला के माध्यम से उन्नत डीवाटरिंग तकनीक को अपनाने की आवश्यकता है।
- खनन परियोजनाओं से यह भी अपेक्षा की जाती है कि वे प्रेक्षण कुओं/पीजोमीटरों की स्थापना और निगरानी करें और सतत भूजल प्रबंधन को सरल बनाने के लिए आवधिक भूजल स्तर और जल गुणवत्ता की निगरानी करें।

(छ): नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत, राष्ट्रीय स्वच्छ गंगा मिशन (एनएमसीजी) ने 192 एमएलडी की उपचार क्षमता के साथ 808.33 करोड़ रुपये की अनुमानित लागत से धनबाद, झारखंड में दामोदर नदी के प्रदूषण को कम करने के लिए एक अवरोधन और डायवर्जन (आई एंड डी) और सीवेज उपचार संयंत्र (एसटीपी) परियोजना को मंजूरी दी है।

*****

अनुलग्नक-I

"नमामि गंगे कार्यक्रम के अंतर्गत भूजल प्रबंधन" के संबंध में दिनांक 30.07.2026 को लोक सभा में उत्तर के लिए देय अतारांकित प्रश्न संख्या 1894 के भाग (ङ) के उत्तर में उल्लिखित अनुलग्नक।

नमामि गंगे कार्यक्रम के तहत पश्चिमी उत्तर प्रदेश के 26 जिलों में स्वीकृत प्रदूषण कम करने वाली परियोजनाओं की सूची

क्र. सं.	जिला	कार्यों का नाम	स्वीकृत परियोजना लागत (रुपए करोड़ में)	एसटीपी क्षमता (एमएलडी)
1	आगरा	आगरा (एचएएम) में सीवरेज योजना के पुनर्वास के साथ इंटरसेप्शन और डायवर्जन	842.25	177.6
2	आगरा	आगरा में शेष नालों का दोहन और सीवेज पंपिंग स्टेशनों (एसपीएस) का संवर्धन	126.41	0
3	अलीगढ़	अलीगढ़ (एचएएम) में इंटरसेप्शन एंड डायवर्जन और एसटीपी कार्य	496.02	113
4	बागपत	बागपत शहर में अवरोधन और डायवर्जन और एसटीपी कार्य	77.36	14
5	बरेली	बरेली (एचएएम) में इंटरसेप्शन और डायवर्जन कार्य और एसटीपी	271.39	63
6	बिजनौर	बिजनौर (एफएसटीपी) में फीकल सलज प्रबंधन (सह-उपचार)	0.39	0
7	बुलंदशहर	नरोरा, बुलंदशहर में सीवरेज योजना	48.45	4
8	बुलंदशहर	अनुप शहर, बुलंद शहर में सीवरेज कार्य	75.79	2.5
9	बुलंदशहर	गुलावठी में इंटरसेप्शन एंड डायवर्जन और एसटीपी कार्य	50.99	10
10	फिरोजाबाद	फिरोजाबाद सीवरेज योजना (इंटरसेप्शन एंड डायवर्जन) कार्य	51.08	0
11	हापुड़	गढ़मुक्तेश्वर में सीवरेज प्रणाली और एसटीपी कार्य	46.51	9
12	हापुड़	हापुड़ में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	49.06	6

13	हाथरस	हाथरस में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	128.91	24
14	कासगंज	कासगंज में एसटीपी के साथ इंटरसेप्शन और डायवर्जन	76.73	15
15	मथुरा	वृंदावन में सीवरेज अवसंरचना का पुनर्वास और संवर्धन/उन्नयन	42.82	4
16	मथुरा	मथुरा सीवरेज योजना का पुनर्वास/नवीनीकरण: मसानी (मथुरा) (एचएएम) में 30 एमएलडी एसटीपी का निर्माण	460.45	67.3
17	मथुरा	मथुरा (एचएएम) में शेष नालों के लिए आई एंड डी और एसटीपी कार्य	292.56	60
18	मथुरा	छाता में आई एंड डी और एसटीपी कार्य	56.15	6
19	मथुरा	कोसी में आई एंड डी और एसटीपी कार्य	66.59	12
20	मथुरा	आईएंडडी और एसटीपी कार्य वृंदावन	77.7	13
21	मेरठ	काली मेरठ नदी (एचएएम) हेतु प्रदूषण कम करने का कार्य	690.71	220
22	मुरादाबाद	मुरादाबाद में सीवरेज प्रणाली और एसटीपी कार्य (चरण-I)	330.05	58
23	मुरादाबाद	मुरादाबाद (सीवरेज जोन-2) (एचएएम) में राम गंगा नदी के लिए प्रदूषण कम करने का कार्य	149.23	25
24	मुरादाबाद	मुरादाबाद (एचएएम) में एसटीपी और अन्य संबंधित कार्यों के साथ मुरादाबाद जोन-3 और जोन-4 के नालों का इंटरसेप्शन और डायवर्जन	420.41	80
25	मुजफ्फरनगर	मुजफ्फरनगर (एचएएम) में इंटरसेप्शन और डायवर्जन कार्य और एसटीपी	234.03	54.5
26	मुजफ्फरनगर	बुढाना (एचएएम) में इंटरसेप्शन और डायवर्जन कार्य और एसटीपी	48.76	10
27	सहारनपुर	सहारनपुर (एचएएम) में इंटरसेप्शन और डायवर्जन (आई एंड डी) और सीवेज उपचार संयंत्र कार्य	577.23	135
28	सहारनपुर	देवबंद में इंटरसेप्शन और डायवर्जन और एसटीपी कार्य	134.71	20

29	शामली	कैराना के लिए इंटरसेप्शन और डायवर्जन कार्य	78.42	15
30	शामली	बनत में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	48.71	5
31	शामली	बाबरी और बंतीखेड़ा में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	55.47	5
32	शामली	थानाभवन में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	97.19	10
33	शामली	शामली में आईएंडडी और एसटीपी कार्य	206.02	40
		कुल	6408.55	1277.90

*****